eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

संपूर्ण क्रांति के जनक जयप्रकाश नारायण

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 25 September 2023 Accepted and Reviewed: 30 September 2023, Published : 01 Nov 2023

Abstract

जयप्रकाश नारायण भारतीय राजनीति और समाज सुधार के क्षेत्र में एक अद्वितीय व्यक्तित्व थे, जिन्होंने संपूर्ण क्रांति का आह्वान कर भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस शोध पत्र में उनके जीवन, विचारधारा, और संपूर्ण क्रांति के सिद्धांतों की विस्तृत समीक्षा की गई है। साथ ही, यह शोध पत्र उनके योगदान को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रखते हुए भारतीय समाज पर उनके प्रभाव को समझने का प्रयास करता है।

कीवर्ड– जयप्रकाश नारायण, संपूर्ण क्रांति, भारतीय राजनीति, समाज सुधार, लोकतंत्र, भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन।

Introduction

भारतीय राजनीति और समाज सुधार के क्षेत्र में जयप्रकाश नारायण का नाम सदैव सम्मानपूर्वक लिया जाता है। उन्होंने न केवल स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय लोकतंत्र और समाज में सुधार हेतु अनेक आंदोलन चलाए। 1974 में उन्होंने संपूर्ण क्रांति का नारा दिया, जो भारतीय राजनीति में एक परिवर्तनकारी मोड़ साबित हुआ। इस आंदोलन ने न केवल तत्कालीन सरकार के खिलाफ व्यापक जनजागरण किया, बल्कि देश में भ्रष्टाचार, सत्ता के दुरुपयोग, और प्रशासनिक असमानताओं के खिलाफ जनआंदोलन को एक नई दिशा प्रदान की।

जयप्रकाश नारायण का जीवन संघर्षों और आदर्शों का प्रतीक रहा है। उन्होंने भारतीय समाज के भीतर व्याप्त अन्याय और असमानता को समाप्त करने के लिए अपने जीवन को समर्पित किया। इस शोध पत्र में उनके जीवन, विचारधारा, और संपूर्ण क्रांति के प्रभाव का विस्तृत अध्ययन किया गया है। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि कैसे जयप्रकाश नारायण के विचार और उनके नेतृत्व में चले आंदोलन आज भी भारतीय समाज और राजनीति को प्रभावित कर रहे हैं।

जयप्रकाश नारायण का जन्म 11 अक्टूबर 1902 को बिहार के सिताबदियारा गाँव में हुआ था। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा पटना में प्राप्त की और उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका गए, जहाँ समाजवाद और राजनीति पर उनकी विचारधारा विकसित हुई। भारत लौटने के बाद, वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से शामिल हुए और महात्मा गांधी के नेतृत्व में काम किया।

जयप्रकाश नारायण की राजनीतिक यात्रा स्वतंत्रता संग्राम के दौरान शुरू हुई। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़े, लेकिन समाजवादी विचारधारा के समर्थक होने के कारण उन्होंने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे समाजवादी और वामपंथी विचारों से प्रेरित थे और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई बार जेल गए।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

स्वतंत्रता के बाद, उन्होंने सक्रिय राजनीति से दूरी बनाकर विनोबा भावे के भूदान आंदोलन का समर्थन किया। लेकिन 1970 के दशक में, देश में बढ़ते भ्रष्टाचार, प्रशासनिक विफलताओं और लोकतांत्रिक मूल्यों के ह्रास को देखते हुए, उन्होंने पुनः राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाई। 1974 में, उन्होंने बिहार में छात्रों के नेतृत्व में भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन का नेतृत्व किया, जो आगे चलकर संपूर्ण क्रांति आंदोलन में परिवर्तित हुआ।

जयप्रकाश नारायण ने सरकार की नीतियों की कड़ी आलोचना की और लोकतंत्र की रक्षा के लिए जनता को संगठित किया। उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से इस्तीफे की मांग की और सत्ता परिवर्तन के लिए अहिंसक आंदोलन का नेतृत्व किया। उनके प्रयासों का परिणाम 1977 के आम चुनावों में देखने को मिला, जब कांग्रेस सरकार पराजित हुई और जनता पार्टी की सरकार बनी।

संपूर्ण क्रांति का विचार– 1974 में, जयप्रकाश नारायण ने संपूर्ण क्रांति का नारा दिया, जिसका उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन लाना था। यह आंदोलन भ्रष्टाचार, राजनीतिक दमन और सामाजिक असमानता के खिलाफ था। उन्होंने इस क्रांति के माध्यम से शासन व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन की मांग की।

संपूर्ण क्रांति का विचार भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। 1970 के दशक में देश में राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक संकट और प्रशासनिक भ्रष्टाचार चरम पर था। शिक्षा संस्थानों में बढ़ते असंतोष और सरकारी तंत्र में फैले भ्रष्टाचार के कारण जनता में आक्रोश पनप रहा था। इसी दौरान, 1974 में बिहार के छात्रों ने सरकार के विरुद्ध आंदोलन शुरू किया, जो आगे चलकर राष्ट्रीय स्तर पर फैल गया। जयप्रकाश नारायण ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया और इसे एक व्यापक सामाजिक और राजनीतिक क्रांति में परिवर्तित कर दिया।

प्रारंभिक चरण (1974), इस चरण में बिहार में छात्रों के नेतृत्व में सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन शुरू हुए। सरकार की दमनकारी नीतियों के खिलाफ छात्रों ने व्यापक जनसमर्थन हासिल किया।

राष्ट्रीय विस्तार (1974–75), जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में आंदोलन ने संपूर्ण देश में विस्तार किया। उन्होंने भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, और प्रशासनिक असमानता के खिलाफ संघर्ष का आह्वान किया। यह चरण सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती बना।

आपातकाल और दमन (1975–77), प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 25 जून 1975 को देश में आपातकाल लागू कर दिया। इस दौरान जयप्रकाश नारायण सहित कई नेताओं को गिरफ्तार किया गया और जनता के मौलिक अधिकारों पर अंकुश लगाया गया।

लोकतंत्र की पुनर्स्थापना (1977), जयप्रकाश नारायण के प्रयासों के चलते 1977 में आम चुनाव हुए, जिसमें कांग्रेस पार्टी को पराजय मिली और जनता पार्टी सत्ता में आई। यह भारतीय राजनीति में एक ऐतिहासिक मोड़ था, जिससे लोकतंत्र की पुनर्स्थापना हुई।

दीर्घकालिक प्रभाव–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

लोकतंत्र की मजबूती– संपूर्ण क्रांति आंदोलन ने लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ किया और जनता को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया।

भ्रष्टाचार के खिलाफ जागरूकता– इस आंदोलन ने सरकारी तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ जनचेतना को जागरूक किया और पारदर्शिता की मांग को बल दिया।

युवाओं की राजनीतिक भागीदारी– इस आंदोलन के कारण बड़ी संख्या में युवा राजनीति से जुड़े और सामाजिक सुधारों के लिए प्रेरित हुए।

नई राजनीतिक शक्तियों का उदय– संपूर्ण क्रांति के परिणामस्वरूप जनता पार्टी का उदय हुआ, जिसने भारतीय राजनीति में गैर–कांग्रेसी सरकारों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

आपातकाल की पुनरावृत्ति पर अंकुश– इस आंदोलन के प्रभाव से भारत में भविष्य में आपातकाल जैसे कठोर कदम उठाने से पहले सरकारें अधिक सतर्क रहने लगीं।

संपूर्ण क्रांति के प्रमुख घटक–

सामाजिक क्रांति– समाज में व्याप्त जातिवाद, असमानता और अन्य सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के लिए संपूर्ण क्रांति का एक प्रमुख उद्देश्य समाज सुधार था।

राजनीतिक क्रांति– लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित करने और भ्रष्टाचार मुक्त शासन व्यवस्था की स्थापना करने के लिए जयप्रकाश नारायण ने राजनीतिक क्रांति का समर्थन किया।

आर्थिक क्रांति– जयप्रकाश नारायण अर्थव्यवस्था में समानता और न्यायसंगत वितरण के पक्षधर थे। उनका मानना था कि समाजवाद के सिद्धांतों के आधार पर आर्थिक क्रांति लाई जा सकती है।

आंदोलन और प्रभाव– जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में बिहार और अन्य राज्यों में छात्र और युवा बड़ी संख्या में सड़कों पर उतरे। इस आंदोलन ने 1975 में आपातकाल लागू होने का मार्ग प्रशस्त किया, जिसने भारतीय राजनीति में व्यापक परिवर्तन किए।

जयप्रकाश नारायण की विरासत– जयप्रकाश नारायण की विरासत भारतीय राजनीति, समाज और प्रशासन में व्यापक रूप से देखी जा सकती है। उनके विचारों और आंदोलनों ने लोकतंत्र को मजबूत किया और भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलनों को प्रेरित किया।

उनकी प्रेरणा से 1980 और 1990 के दशकों में कई सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों का उदय हुआ। उनके सिद्धांत आज भी भारतीय राजनीति और समाज सुधार के लिए प्रासंगिक हैं। उनके योगदान को देखते हुए, उन्हें मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

अंततोगत्वा जयप्रकाश नारायण न केवल एक स्वतंत्रता सेनानी थे, बल्कि एक नैतिक और सामाजिक क्रांति के अग्रदूत भी थे। उनका योगदान भारतीय राजनीति में अमूल्य है, और उनकी विचारधारा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनी रहेगी। उनका नेतृत्व न केवल एक सरकार के खिलाफ विद्रोह था, बल्कि एक व्यवस्था परिवर्तन की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था। संपूर्ण क्रांति का संदेश आज भी भारतीय समाज

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

में प्रासंगिक है, और यह हमें लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक न्याय और राजनीतिक शुचिता की रक्षा करने की प्रेरणा देता है।

सन्दर्भ सूची–

1ण नारायण, जयप्रकाश. संपूर्ण क्रांति का दर्शन. नई दिल्लीरू लोकनायक प्रकाशन, 1975।
2ण शर्मा, रामचंद्र. भारतीय राजनीति और जयप्रकाश नारायण. पटनारू बिहार बुक डिपो, 1980।
3ण मिश्र, अरुण. समाजवाद और जयप्रकाश नारायण का योगदान. मुंबईरू नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1995।
4. Prasad, Bimal. The People's Leader: Life of Jayaprakash Narayan. New Delhi: Penguin Books, 2010.
5. Jaitley, Arun. Total Revolution: The Political Philosophy of JP. New Delhi: Rupa Publications, 2015.
6. Frankel, Francine R. India's Political Economy 1947-2004: The Gradual Revolution. Oxford University Press, 2005.
7. Narayan, Jayaprakash. Prison Diary. Bombay: Popular Prakashan, 1977.
8. Narayan, Jayaprakash. Democracy and Socialism. Calcutta: Minerva Associates, 1974.
9. Morris-Jones, W. H. The Government and Politics of India. Hutchinson University Library, 1971.
10. Lohia, Rammanohar. Marx, Gandhi and Socialism. Navahind, 1963.
11. Sharma, K. L. Social Stratification and Mobility in India. Rawat Publications, 1994.
12. Gupta, Amit Kumar. Political Movements in Bihar: 1912-1947. Manohar Publications, 1983.
13. Yadav, Yogendra. Democratic Politics in India. Oxford University Press, 2000.
14. Sinha, Arun. JP Movement: Emergency and India's Second Freedom. Penguin Books, 2014.
15. Sen, Amartya. Development as Freedom. Oxford University Press, 1999.
16. Dhanagare, D. N. Peasant Movements in India. Oxford University Press, 1983.
17. Brass, Paul R. The Politics of India Since Independence. Cambridge University Press, 1994.
18. Weiner, Myron. State Politics in India. Princeton University Press, 1968.
19. Chandra, Bipan. India Since Independence. Penguin Books, 2008.
20. Khilnani, Sunil. The Idea of India. Farrar, Straus and Giroux, 1997.
21. Bose, Sugata. Modern South Asia: History, Culture, Political Economy. Routledge, 2011.
22. Hasan, Zoya. Politics and the State in India. Sage Publications, 2000.
23. Roy, Ramashray. Indian Political System: A Study in Government and Politics. National Book Trust, 1999.
24. Jayaprakash, Anand Kumar. JP to BJP: Bihar After Lalu and Nitish. Sage Publications, 2017.
25. Tully, Mark. India in Slow Motion. Penguin Books, 2002.
26. Verghese, B. G. Warrior of the Fourth Estate: Ramnath Goenka of the Express. Viking, 2005.
27. Austin, Granville. Working a Democratic Constitution: The Indian Experience. Oxford University Press, 1999.
28. Jha, Kumar Suresh. Jayaprakash Narayan and Indian Politics: An Analysis of His Political Ideology and Movement. Concept Publishing, 2003.
29. Bhattacharya, Sabyasachi. Rethinking 1857. Orient Blackswan, 2007.